



कन्हैयालाल मत्त

हुआ सवेरा

हुआ सवेरा, गया अँधेरा,
सूरज रहा निकल
हाँ भई फक्कड़, लाल बुझक्कड़,
तू भी ढंग बदल ।

बुरे काम तज, राम राम भज,
मत रट मरा-मरा
अपने-अपने, देख न सपने,
मन रख हरा-भरा ।

अगर-मगर में, उलझ डगर में,
क्यों तू अड़ा-खड़ा
मस्त उछलता, रह तू चलता,
नाम कमा तगड़ा ।

है बेमानी, सनक पुरानी,
उसको दूर भगा
नई कहानी, सुना जबानी,
पिछले गीत न गा ।



इम्तिहान से छुट्टी पाई

बौड़मजी ने इम्तिहान में,
खूब अक्ल का जोर लगाया।
अगली-बगली रहे झाँकते,
फिर भी एक सवाल न आया॥

गिनते रहे हॉल की कड़ियाँ,
यों ही घंटे तीन बिताए।
कोरी कापी वहीं छोड़कर,
हँसी-खुशी वापस घर आए॥

आकर खूब कबड्डी खेले,
फिर यारों में गप्प लड़ाई।
मौज-मजे से दिन गुजारकर,
इम्तिहान से छुट्टी पाई॥

